आचार्य नयनन्दि

जीवन-परिचय : आचार्य नयनन्दि अपने युग के प्रसिद्ध आचार्य हैं। इनके गुरु का नाम माणिक्यनन्दि त्रैविद्य था। नयनन्दि ने अपने ग्रन्थ 'सुदंसणचरिउ' में अपनी गुरु-परम्परा अंकित की है। यथा—

भगवान महावीर के शासन काल में कुन्दाकुन्दान्वय की क्रमागत परम्परा में नक्षत्र नाम के आचार्य हुए हैं। तत्पश्चात् पद्मनन्दि, विष्णुनन्दि और नन्दनन्दि, विशाखनन्दि, रामनन्दि, माणिक्यनन्दि और नयनन्दि नाम के आचार्य हुए हैं। नयनन्दि का समय विक्रम संवत् की 11वीं शताब्दी का अन्तिम और 12वीं शती का प्रारम्भिक भाग है।

'सुदंसणचरिउ' का रचनाकाल स्वयं ही ग्रन्थकर्त्ता ने अंकित किया है। यह ग्रन्थ विक्रम संवत् 1100 में धारा नगरी के एक जैन मन्दिर में रचा गया है।

रचना-परिचय : आचार्य नयनन्दि के द्वारा लिखित रचनाएँ निम्न हैं :

1. सुदंसणचरिउ : 'सुदंसणचरिउ' अपभ्रंशभाषा का एक खंडकाव्य है, जो महाकाव्यों की श्रेणी में रखने योग्य है। ग्रन्थ का चरित्र भाग रोचक और आकर्षक है। काव्यकला की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ उच्चकोटि का है। इसमें पञ्चनमस्कार मन्त्र का फल प्राप्त करनेवाले सेठ सुदर्शन के चरित्र का वर्णन किया गया है। पूरा ग्रन्थ पूरा 12 सन्धियों में विभक्त है।

2. सयलविहिविहाण : सयलविहिविहाण (सकलविधिविधान) काव्य में 58 सन्धियाँ हैं पर यह ग्रन्थ अपूर्ण ही उपलब्ध है। यह ग्रन्थ इतिहास की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। संसार की असारता और मनुष्य की उन्नति-अवनति का भी इसमें हृदयस्पर्शी चित्रण आया है।